ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

साहित्य में नारी चेतना के विविध आयाम

नीतू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
आई0 टी0 पी0 जी0 कालेज,
लखनऊ

सारांश

स्त्री लेखन और स्त्री–विमर्श आधुनिक युगा का ज्वलन्त मुद्दा है। महिला लेखिकाओं का साहित्य अपने सीमित दायरे से निकल कर समाज के विस्तृत फलक को स्पर्श करता है प्रारम्भ में उनके लेखन को हेय दृष्टि से देखा गया। चेखव, टी0एस0 इलियट, बर्जिनिया वुल्फ जैसे विद्वानों ने उनका मजाक उड़ाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। 19वीं शदी में हार्थर्न ने उनके उपन्यासों को सनसनी और भावुकतापूर्ण बताया है। हिन्दी के आलोचकों ने भी उनकी उपेक्षा की। सन् 1984 की 'सारिका' में एक वरिष्ठ आलोचक ने लिखा है कि स्त्री की रचनाएँ इसलिये छपती है कि वे स्त्रियाँ है

मुख्य शब्द : स्त्री–विमर्श, सारिका, स्त्री लेखन।

प्रस्तावना

वर्जीनिया वुल्फ ने लिखा है'' स्त्री का लेखन स्त्री का होता है, स्त्रीवादी होने से बच नहीं सकता है। अपने सर्वोत्तम में स्त्रीवादी ही होगा''।

पुरूष प्रधान समाज में स्त्री का निरन्तर शोषण हुआ। अपने देश में वह शूद्र की श्रेणी में रखी गयी, केवल भोग्या लेखन अपने सुख–दुःख के सीतिम दायरे से ऊपर उठकर पुरूष–लेखन की बराबरी कर रहा है। उनका साहित्य अनेक आयामों में विस्तार पर रहा है। पुरूष लेखन के समान ही उसमें बौद्धिक तथा समाज के अनछूए पहले को स्पर्श करने वाला लेखन सामने आ रहा है।

आज पुरूष–लेखन का वर्चस्व का चुनौती देती हुई एक लम्बी कतार खड़ी है। महाश्वेती देवी, अनीता देसाई, अरून्धती राय, किरन देसाई, प्रतिभा, कृष्णा, सोबती, मन्नू भण्डारी आदि। मन्नू भण्डारी का '' आपका बंटी'' सन् 1917 में छप चुका था,जिसमें मध्यवर्ती समाज की पारिवारिक विडम्बन देखने को मितली है। स्त्री–पुरूष अहं की टकराहट की मार बंटी को झेलनी पड़ती है। वह माता–पिता को रहते हुए भी निर्वासित सा जीवन व्यतीत करता है, जिसमे एक औरत में कई रूप देखने को मिलते है। जहाँ एक ओर माँ बनकर अपने बेटे के लिए तड़पती है वहीं दूसरी ओर अजय को टार्चर करने के लिए बंटीका इस्तेमाल करती है। वह दिखा देना चाहती है कि केवल पुरूष ही अत्याचार करना नहीं जानता। वास्तव में यह परिवार और स्त्री की जटिल समस्याओं का उपन्यास है। जो समाधान नहीं, प्रश्न उठाता है। प्रश्न भी कई स्तरों पर। कृष्णा सोबती का ''जिन्दगी नामा'' 1979 में प्रकाशित हुआ, तो पंजाब के एक गाँव पर आधारित होते हुए पूरे पंजाब का एक जीवंत दस्तावेज है। मन्नू भण्डारी का 'आपका बंटी' कृष्णा सोबती का 'जिन्दगी नामा' आदि उपन्यासों को पुरूष के समकक्ष रखने में किसी मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओं का सजीव दस्तावेज है। परिवार का मुखिया जब तक कमाऊ रहता है, तब तक उसका सभी सम्मान करते है, लेकिन वह जब रिटायर होकर घर में रहने के लिए आता है, तब सबके लिए उबाऊ व बोझ बन जाता है। वह अपने बीवी–बच्चों के बीच में अजनवी बन जाता है। ऊषा की यह कहानी संवेदनहीन होते समाज का रूप प्रकट करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

मृदुला गर्ग का 'आँवा' एक ऐसी मजदूर बेटी की जीवटता के संघर्ष की गाथा है जिसमें उसके मोह भंग, पलायन, अन्ततः उसकी वापसी की ऐसी छवी है, जो हमें एक परम्परागत स्त्री की अपेक्षा एक ऐसी स्त्री से रूबरू कराती है जो अनेक रूढ़ियों, परम्पराओं का निषेध करती है। एक मजदूर बेटी नमिता अपनी छोटी सी आकांक्षा पूरी करने के लिए समाज में संघर्ष करती है। उसे हर जगह एक मजदूर बाप की बेटी का दर्द झेलना पड़ता है। वह किस तरह खुरदरे और मुलायम रास्ते से चलते हुए अपने गंतव्य तक पहुँचती है। ''स्त्री का लेखन केवल स्त्री के लिए कहना सरासर गलत है। महाश्वेता देवी का लेखन अपने में बेजोड़ है। '' अग्निगर्भ'' में आदिवासी समाज का जा परिवेश, उनकी विडम्बना, संघर्षशील जीवन का मर्मस्पर्शी, कारूणिक चित्र वे प्रस्तुत करती है, वह एक

जुझारू व्यक्तित्व वाली नारी ही कर सकती है। महाश्वेता जी ने आजीवन अपनी कर्मठ लेखनी, समाज के उपेक्षित वर्ग, दलित आदिवासी, शोषित महिला पर चलाया। अरून्धी राय 'दगाड ऑफ स्माल थिंग्स' लिखकर अपनी सूक्ष्म परिष्कृत लेखनी का परिचय देती है।

कुछ स्त्री लेखिकाएँ परिश्चमी सभ्यता से प्रभावित होकर, निमर्मता से यौन कुंठाओं, वर्जनाओं को तोड़ती हुई दिखायी दे रही है। उनका साहित्य कोरा रोमांस का लोथड़ा साबित होता है, जो पाठक को न कोई नई सोच दे पाता है और न कोई दिशा। ये लेखिकाएँ मुक्त प्रेम के नाम पर मुक्त देह सम्बन्धों को बढ़ावा दे रही है, जो भारतीय संस्कृति की देन नहीं, बल्कि पश्चिमी सभ्यता की चमक–दमक है। वे पुरूष वर्चस्व का विरोध करते हुए भी पुरूष की ओर से ही लड़ रही है।

मृदुला गर्ग का 'चितकोबरा' अपने सनसनीखेज और मुक्त यौन सम्बन्ध वर्णन के लिए प्रसिद्ध है।

कृष्णा सोवती का 'सूरजमुखी' अंधेरे में, केवल रोमांस–सेक्स का व्योरा ही पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। निर्मल वर्मा का 'वे दिन' केवल यादों की स्मृतियों का संचार है जो बीते हुए पलों का भण्डार है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कुशल अपनी लेखनी से साहित्य में कुछ नया करने का प्रयास ने करके उसे नये तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। मैत्रेयी का 'कस्तूरी' कुण्डलि बसै' स्त्री जीवन संघर्ष की दृष्टि से सफलतम प्रयास है। जिसमें कस्तूरी देवी समाज, गाँव, गलियों के आलोचना की परवाह किये बगैर निरक्षर होने पर भी साक्षर बनने की बीड़ा उठाती है। वह आन्दोलन में भी भाग लेती है। जेल में जाती है लेकिन जीवन, स्वाभिमान के साथ जीति है।

प्रभा खेतान का 'आन्या से अनन्या' सभी नैतिक आचराणों, सामाजिक बन्धनों को चुनौती देती है, लेकिन यह रचना अन्त तक एक संवेदनात्मक, सम्मोहन की साबित होती है। समाज परिवर्तन की महत्वपूर्ण परिणति महिला–लेखन में देखने को मितली है। यहाँ उपभोक्तावाद, बाजारवाद, भूमण्लीकरण के नाते पुराने मूल्यों, स्थापनाओं को तोड़कर नये मूल्य, नई स्थापनाएँ गढ़ी जा रही है। वर्तमान युग में नारी लेखन संस्कृति, रचनात्मक–सामाजिक क्षेत्र में विशेष रूप में सफल हो रहा है।

तस्लीमा नसरीन ने ''लज्जा'' लिखकर महिलाओं पर लगे सामाजिक बन्धनों को उजागर करके सिद्ध कर दिया कि महिला भी धर्म स्थलों में हो रहे अत्याचार का शिकार होती है। लूट, अत्याचार, धर्म के नाम पर हिन्दू–मुस्लिम झगड़े एवं मानवता–विरोधी तत्वों को बखूबी वे अपने उपन्यासों में प्रस्तुत करती है।

आज की स्त्री लेखिका ने आदर्श और भावुकता के नाम पर होने वाले इमोशलन ब्लेकमेन को पहचाना है और प्रेम, विवाह और परिवार को ही अपने जीवन की परम परिणति मानने से सर्वथा इन्कार किया है। आधुनिक जीवन की नई क्रूरताओं, नये शोषण से उसका सामना पड़ता रहा है और नये जीवन के यर्थाथ सत्य को अनावृत करने के लिये जूझ रही है।

अधिकांश महिला लेखिकाए जागरूक और बुद्धिजीवी है। पुरूष के शोषण उसके दंम, उसके देश को उन्होंने स्वयं भी रहा है इसलिए उनका लेखन अधिक सजीव है, अभिव्यक्ति में ईमानदारी और अनुभवो में मौलिकता है।

स्त्री–लेखन को एक तेजी से विकसित होती विचारधारा के रूप में देखा जाना चाहिए। इस आवधारणा में विचारों का एक विस्तृत फलक समाहित है और इसके सामने व्यापक सम्भावनाएं भी है। स्त्री–लेखन एक ऐसी अवधारणा है जो पुरूष प्रभुत्व और महिला अधीनीकरण के आलोचनात्क विश्लेषण के आधार पर सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक बदलाव का आग्रह करती है। स्वाधीनता के परिणामस्वरूप हमारे समाज में जैसे–जैसे आधुनिकता का संचार होता गया, वैसे–वैसे नारी में नवीन चेतना जागृत होती गयी। अतः जीवन के सभी क्षेत्रों में आज नारी की भागीदारी बढ़ी है। इसी के साथ उनकी समस्याए भी बढ़ी है। इन्ही समस्याओं को दृष्टिगत रखकर स्त्री–लेखन ने अपनी लेखनी का ताना बाना बुना है। उन्होंने हमारे समाज में एक खास वर्ग और स्तर से सम्बन्ध रखने वाली स्त्रियों की समस्याओं का उद्घाटन किया। स्त्री लेखन आधुनिक नारी जीवन के दबाव और प्रताडनाओं तथा इनसे मुक्त होने के लिए स्त्री की संघर्ष–क्षमता को अभिव्यक्त करता है। यह लेखन स्त्री को उसकी मुक्ति, स्वतंत्रता, स्वाभिमान और अस्मिता की तलाश का मार्ग दिखाता है।

निष्कर्ष

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दो दशकों में कुछ स्त्री लेखिकाएँ उभर कर सामने आती है। ये है–ऊषा देवी मित्रा, होमवली देवी, चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, रजनी पण्णिकर आदि। हिन्दी कथा–साहित्य में इस तरह स्त्री–लेखन की एक लम्बी कतार दिखायी देती है। सामान्यतः उनके अनुभव का दायरा सीमित न होकर विस्तृत है। रूपतामक प्रयोग भी अधिक हुए है। स्त्री–चेतना के कई आयामों को लेकर उन्होंने कई अच्छी रचनाओं से साहित्य को समृद्ध किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *समकालीन भारतीय साहित्य– संपादक यू0आर0 अनन्तमूर्ति अंक 56 अप्रैल जून 1994*
2. *पहल–संपादक ज्ञानरंजन अंक 81,वर्ष 2005 जबलपुर।*
3. *वागर्थ– संपादक एकांत कुसुम खेतानी, अंक 155 वर्ष जून 2008।*
4. *अन्यथा–संपादक कृष्ण किशोर अंक 1, अगस्त 2005 1062, राबिन कोर्ट यू0एस0 ए0।*